

**Dr. Priti Ranjan**

**H. O. D history department**

**H. D jain college, ara**

### **Notes for pg sem 1**

इतिहास लेखन में स्रोतों की क्या भूमिका है?

भूमिका :

इतिहास केवल बीती घटनाओं का वर्णन नहीं होता, बल्कि उन घटनाओं के *प्रमाणिक पुनर्निर्माण* की प्रक्रिया है। किसी भी ऐतिहासिक तथ्य की सत्यता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके पीछे कौन-से स्रोत (Sources) उपलब्ध हैं और उनका उपयोग किस प्रकार किया गया है।

इसलिए कहा गया है—

“Sources are the backbone of history.”  
— (E. H. Carr)

स्रोत इतिहासकार के लिए वैसे ही हैं जैसे न्यायाधीश के लिए साक्ष्य। बिना स्रोतों के इतिहास केवल कल्पना बन जाता है।

1. स्रोतों की परिभाषा :

‘स्रोत’ (Source) का अर्थ है — वह सामग्री जिससे अतीत के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इतिहासकार इन्हीं स्रोतों के आधार पर अतीत की घटनाओं का पुनर्निर्माण करता है।

2. इतिहास लेखन में स्रोतों का वर्गीकरण :

इतिहास के स्रोतों को दो प्रमुख श्रेणियों में बाँटा जाता है —

### (क) प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

वे स्रोत जो प्रत्यक्ष रूप से घटना-काल से संबंधित हों।

**उदाहरण:**

- अभिलेख (शिलालेख, ताम्रपत्र, राजाज्ञा)
- सिक्के
- शिल्प एवं स्थापत्य अवशेष
- समकालीन ग्रंथ
- पत्र, डायरी, यात्रा-वृत्तांत आदि

**विशेषता:** ये स्रोत सबसे विश्वसनीय माने जाते हैं क्योंकि इनमें मध्यस्थ व्याख्या नहीं होती।

### (ख) द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

वे स्रोत जो प्राथमिक स्रोतों पर आधारित होते हैं।

**उदाहरण:**

- इतिहास की पुस्तकें
- शोध-प्रबंध
- विवरणात्मक अध्ययन
- लेख, निबंध, और टीकाएँ

**विशेषता:** ये स्रोत व्याख्यात्मक होते हैं और इनमें लेखक की दृष्टि या मत भी सम्मिलित होता है।

3. भारतीय इतिहास लेखन के प्रमुख स्रोत

### (क) पुरातात्विक स्रोत

- **अभिलेख:** अशोक के शिलालेख, इलाहाबाद प्रशस्ति, हर्ष के ताम्रपत्र आदि।
- **सिक्के:** मौर्य, कुषाण, गुप्त कालीन सिक्कों से राजनैतिक और आर्थिक जानकारी मिलती है।
- **पुरास्थल:** सिंधु घाटी सभ्यता, सांची, अजन्ता, एलोरा आदि से सांस्कृतिक जीवन का परिचय।

### (ख) साहित्यिक स्रोत

- **धार्मिक ग्रंथ:** वेद, उपनिषद्, पुराण, त्रिपिटक, आगम आदि।
- **सेक्युलर ग्रंथ:** अर्थशास्त्र (कौटिल्य), राजतरंगिणी (कल्हण), हर्षचरित (बाणभट्ट)।
- **विदेशी यात्रियों के विवरण:**
  - मेगास्थनीज (Indica),

- हवेनसांग, इत्सिंग (चीन),
- अलबरूनी (Tahqiq-i-Hind),
- इब्नबतूता (Rihla)।

#### (ग) मौखिक स्रोत

लोकगीत, लोककथाएँ, जनश्रुतियाँ और लोकनृत्य आदि ग्रामीण या आदिवासी समाज के इतिहास को समझने में सहायक हैं।

#### (घ) आधुनिक स्रोत

- सरकारी दस्तावेज़, संसद के अभिलेख, जनगणना रिपोर्ट, समाचार पत्र, डायरियाँ, और फोटो।
- इनसे आधुनिक भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन संभव है।

### 4. इतिहास लेखन में स्रोतों की भूमिका

#### (क) ऐतिहासिक तथ्यों की प्रमाणिकता स्थापित करना

स्रोत यह प्रमाणित करते हैं कि कोई घटना वास्तव में हुई थी या नहीं।

जैसे – अशोक के शिलालेखों से उनके धर्म-प्रचार और नीतियों का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।

#### (ख) अतीत के पुनर्निर्माण का आधार

इतिहासकार घटनाओं का कालक्रम, कारण और परिणाम इन्हीं स्रोतों से तय करता है।

जैसे – सिंधु सभ्यता की पूरी पहचान खुदाई (पुरातात्विक स्रोत) से हुई।

#### (ग) समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था की समझ

स्रोतों से केवल राजाओं और युद्धों की जानकारी नहीं, बल्कि समाज, धर्म, कला, व्यापार और जीवनशैली का भी ज्ञान होता है।

#### (घ) विभिन्न दृष्टिकोणों का निर्माण

स्रोतों की भिन्न व्याख्या से इतिहास में विविध दृष्टियाँ (राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपालंभवादी आदि) विकसित होती हैं।

#### (ङ) वस्तुनिष्ठता बनाए रखना

स्रोतों का वैज्ञानिक और आलोचनात्मक उपयोग इतिहास को कल्पना से बचाता है।

इससे इतिहासकार निष्पक्षता (objectivity) के निकट पहुँचता है।

## 5. स्रोतों की सीमाएँ

- सभी स्रोत पूरी तरह विश्वसनीय नहीं होते।
- कभी-कभी लेखक की व्यक्तिगत या राजनीतिक प्रवृत्ति झलकती है।
- बहुत से स्रोत नष्ट हो चुके हैं या अपूर्ण अवस्था में मिले हैं।
- पुरातात्विक स्रोतों की तिथि निर्धारण की कठिनाइयाँ भी इतिहासकार के सामने चुनौती बनती हैं।

## 6. निष्कर्ष :

इतिहास लेखन में स्रोतों की भूमिका *रीढ़ की हड्डी* के समान है। स्रोत ही इतिहास को कल्पना से वास्तविकता में बदलते हैं। इतिहास की विश्वसनीयता और वैज्ञानिकता, दोनों ही इस बात पर निर्भर करती हैं कि स्रोतों का चयन और विश्लेषण कितनी सावधानी और निष्पक्षता से किया गया है।

“Without sources there can be no history; without interpretation of sources, there can be no historical understanding.”

### संक्षेप में:

स्रोत ही इतिहास की आत्मा हैं। वे अतीत को वर्तमान से जोड़ते हैं और हमें अपने सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा सामाजिक विकास का सजीव बोध कराते हैं।